धनुष यज्ञ - एक वैज्ञानिक पक्ष

श्री गोपाल कृष्ण फरलिया,
नई दिल्ली, फोन: 9810675219

प्राचीन युग में भारत में विज्ञान अपनी चरम सीमा पर था। रामायणकालीन महान वैज्ञानिकों में भगवान शिव सर्वोच्च वैज्ञानिक थे तथा उनके शिष्यों में भगवान राम, पवन पुत्र हनुमान एवं माता सीता अग्रणी थे। यह सर्वविदित है कि विज्ञान मर्मज्ञ एवं अनुसंधान में संलग्न वैज्ञानिक प्रायः अपनी प्रयोगशाला में व्यस्त रहते हैं। ऐसे वैज्ञानिक आम जनता से दूर, एकान्त में स्थापित अपनी वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में कार्यरत रहते हैं। इसी प्रकार भगवान शिव भी हिमालय में स्थित अपने गुप्त स्थानों पर स्थित प्रयोगशालाओं में व्यस्त रहते थे। इसलिए भगवान शिव को कैलाशपति भी कहा जाता है। श्रीरामचरितमानस में निम्नलिखित चौपाई इसका प्रमाण है।

गनन्ह समेत बसहिं कैलासा

(1/103/5)

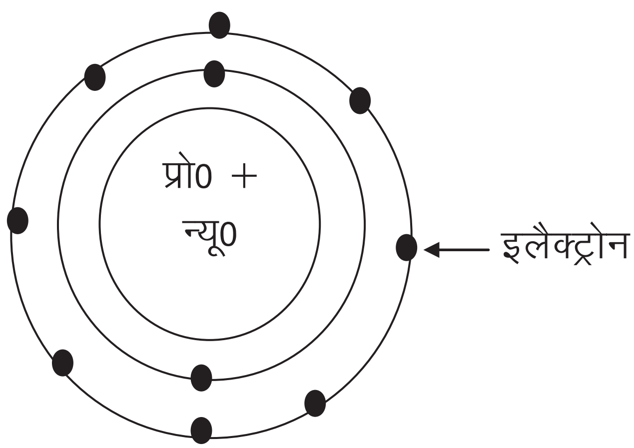

परमाणु की संरचना

शिव धनुष की कठोरता के संदर्भ में परमाणु की संरचना के बारे में समझाना चाहेंगे। जैसा कि आज के विज्ञान को पता है कि परमाणु के केन्द्र में प्रोटोन एवं न्यूट्रोन होते हैं, जिनकी संख्या अलग–अलग तत्वों में अलग–अलग होती है। हल्के तत्वों में इनकी संख्या कम होती है तथा भारी तत्वों में प्रोटोन और न्यूट्रोन की संख्या अधिक होती है। नाभकीय केन्द्र में जितने अधिक प्रोटोन और न्यूट्रोन होंगे तत्व उतना ही भारी हो जायेगा।

प्राकृतिक रूप से प्राप्त तत्वों में यूरेनियम सबसे भारी उपलब्ध तत्व है। वैज्ञानिकों ने हैसीयम जिसका घनत्व 40.7 ग्राम/सेमी है, तत्व का अप्राकृतिक रूप से निर्माण किया है जो कि एक सैकिन्ड के हजारवें हिस्से तक ही निर्मित रहता है। अतः अगर हम किसी विधि द्वारा नाभकीय केन्द्र में अधिक मात्रा में प्रोटोन और न्यूट्रोन कर दें तथा उसकी परिधि में वैज्ञानिक क्रिया द्वारा इलैक्ट्रोन डाल दें और फिर उस भारी तत्व से धनुष जैसी वस्तु का निर्माण करें तो उस वस्तु का भार बहुत अधिक हो जायेगा। आज के वैज्ञानिक इस क्रिया को करने का प्रयत्न तो कर रहे हैं, परन्तु अभी सफल नहीं हो पाये हैं।

आज हम यह जानते हैं कि एक परमाणु में प्रोटोन, न्यूट्रोन एवं इलैक्ट्रोन पाये जाते हैं तथा हमको विदित है कि प्रोटोन में धनात्मक चार्च होता है। हमको यह भी पता है कि दो धनात्मक बिन्दु या कण अगर पास पास लाये जाये ंतो वे एक दूसरे को धकेलते हैं। किन्तु आश्चर्य यह है कि एक परमाणु के केन्द्र में अनेकों प्रोटोन होते हैं, किन्तु फिर भी वे परमाणु को स्थायित्व प्रदान करते हैं। इसका कारण वैज्ञानिकों ने परमाणु ऊर्जा बताया है। अगर नाभकीय केन्द्र का विघटन किया जाये तो असीम ऊर्जा प्राप्त होती है। आज का विज्ञान इस ऊर्जा को समझता है तथा उसके आधार पर ही परमाणु ऊर्जा का उपयोग किया जाता है। परमाणु विद्युत एवं परमाणु बम भी इसी सिद्धांत पर आधारित है।

परमाणु की संरचना की तुलना हम अपने सौर–मंडल से कर सकते हैं। सौर मंडल के केन्द्र में अधिकतम घनत्व का विशालकाय सूर्य अपनी ऊर्जा से सभी ग्रहों को प्रकाशित कर रहा है एवं सभी प्राणियों तथा वनस्पतियों में ऊर्जा का संचार कर रहा है। सूर्य के चारों ओर सभी ग्रह अपनी परिधियों में चक्कर लगाते हैं। इन ग्रहों की सूर्य से काफी दूरी है। अगर सूर्य एवं इन ग्रहों की दूरी के अन्तराल को सूर्य की घनत्व वाली वस्तु से भर दिया जाये तो सूर्य मंडल का घनत्व वर्तमान घनत्व से अरबों खरबों गुना हो जाएगा। एक अनुमान के अनुसार प्रोटोन का आयतन 0.87×10^{-15} से 0.84×10^{-15} घन सेंटीमीटर तथा अर्धव्यास लगभग 1.0×10^{-13} सेंटीमीटर होता है। अतः 1 घन से0मी0 प्रोटोन का भार लगभग 10^{-12} किलोग्राम होगा। किसी तत्व को भारी बनाने के लिए या तो उसके घनत्व को बढ़ाया जाये या नाभकीय केन्द्र में न्यूट्रोन एवं प्रोटोन की संख्या बढ़ाई जाये। इस क्रिया को करने में आज का विज्ञान सक्षम नहीं है। किन्तु आज का विज्ञान यह बताता है कि इस प्रकार की क्रिया को किया जा सकता है। आज के वैज्ञानिकों ने उनुओक्टियम (Ununoctium) जिसका परमाणु भार 294 है, का निर्माण अवश्य किया है परन्तु इसका अर्धजीवन .001 सैकिन्ड है। इस क्रिया को करने में वैज्ञानिक सन् 2002 में ही सफल हो पाये हैं। आज के वैज्ञानिक यह मानते हैं कि विश्व में इससे भी भारी तत्व मौजूद हैं।

अगर किसी वैज्ञानिक को परमाणु के नाभकीय केन्द्र में अधिक न्यूट्रोन एवं प्रोटोन डालने की क्रिया ज्ञात हो तथा इस पद्धति से उस पदार्थ का जीवन काल भी स्थायी हो सके तब क्या यह संभव नहीं है कि उस पदार्थ से बना धनुष भारी एवं कठोर होगा। भगवान शिव ने अपने द्वारा निर्मित इस भारी तत्व से बना धनुष राजा जनक को परशुराम जी के द्वारा प्रदान किया था तथा उन्होंने उस पर अन्वेषण करने को कहा जिससे कि विपरीत क्रिया द्वारा उस धनुष को हल्के तत्वों में बदलकर धनुष को एक साधारण धनुष बनाया

जा सके।

कुछ विद्वानों का मत है कि राक्षसों ने ऋषि मुनियों पर भयंकर अत्याचार किए तथा उन्होंने उनके रक्त से घड़ा भर लिया। तब एक ब्रह्मनिष्ठ मुनि ने उनको शाप दिया कि इस रक्त से ही राक्षस वंश का नाश होगा। इससे भयभीत होकर राक्षसों ने सुदूर उत्तर दिशा में हिमालय की तलहटी में वह रक्त पूरित घड़ा जमीन में दबा दिया। कालान्तर में जब जनकपुरी में भयंकर अकाल पड़ा, तब ऋषि मुनियों के बताने पर धर्मनिष्ठ राजा जनक ने स्वयं हल चलाकर जमीन को जोता था। हल की नोक, जिसको **'सीत'** भी कहते हैं, के टकराने से घड़ा टूटने पर एक सुन्दर बालिका प्रकट हुई। सीत के टकराने से बालिका प्रकट हुई, अतः उसका नाम **'सीता'** रखा गया। इस प्रकार से यह भी मान्यता है कि सीताजी में ब्रह्मनिष्ठों की वैज्ञानिक क्षमता स्वतः आ गई। सीता माता जब बालिका थीं तब शिव मंदिर में नित जाया करती थीं जो कि उनका शोध स्थान था। माता सीता पर भी भगवान शिव का आशीर्वाद था तथा उनकी ही देखरेख में वैज्ञानिक ज्ञान को सीखा था। उनको परमाणु संरचना एवं परमाणु के विभिन्न अवयवों जैसे प्रोटोन, न्यूट्रोन एवं इलैक्ट्रोन को अलग–अलग करने की विधि प्राप्त करने में काफी महारत प्राप्त हो गई थी। उन्होंने शिवजी के धनुष को, जो जनक जी को परशुराम जी के द्वारा प्राप्त हुआ था, अपने वैज्ञानिक ज्ञान से हलका कर दिया तथा जिसे स्वयं राजा जनक भी कभी नहीं उठा सके, सीता जी ने उसे उठाकर दूसरे स्थान पर रखकर पुनः उसे भारी बना दिया। यह बात जब राजा जनक को मालूम हुई तब उन्होंने निश्चय किया कि सीता से अधिक विद्वान व्यक्ति से उनका विवाह किया जाये, अतः राजा जनक ने यह घोषणा करवाई कि जो उस शिव धनुष को तोड़ देगा उसी के साथ ही सीता का विवाह किया जाएगा।

नृप भुजबलु बिधु सिवधनु राहू। गरुअ कठोर बिदित सब काहू।।
रावनु बानु महाभट भारे। देखि सरासन गवँहिं सिधारे।।
सोइ पुरारि कोदंडु कठोरा। राज समाज आजु जोइ तोरा।।
त्रिभुवन जय समेत बैदेही। बिनहिं बिचार बरइ हठि तेही।।

(1 / 250 / 1—4)

राजाओं द्वारा जब शिव धनुष को उठाने का प्रयत्न किया गया तो धनुष अधिक से अधिक भारी होता गया। जिन राजाओं को अपने विवेक का पता था तथा वे जानते थे कि शिव धनुष की तकनीकि को वे नहीं समझ पा रहे हैं तो वे धनुष के पास ही नहीं जाते थे।

जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीं। चाप समीप महीप न जाहीं।।

(1 / 250 / 8)

इससे यह स्पष्ट है कि शिव धनुष को उठाना बल प्रयोग से संभव नहीं था। यह तो एक वैज्ञानिक प्रतिक्रिया थी तथा जो लोग इस वैज्ञानिक ज्ञान को समझ सकते थे, वे ही धनुष को उठा सकते थे।

भूप सहस दस एकहि बारा। लगे उठावन टरइ न टारा।।
डगइ न संभु सरासनु कैसें। कामी बचन सती मनु जैसें।।

(1 / 251 / 1—2)

इस प्रकार हजारों राजाओं द्वारा एक साथ धनुष को उठाने का प्रयत्न करने पर भी शिवजी का धनुष टस से मस नहीं हुआ, अतः शिव धनुष भंग राजाओं के बल को नापना मात्र नहीं था, अपितु उनके वैज्ञानिक ज्ञान की परीक्षा थी। भगवान राम भी भगवान शिव के शिष्य थे। भगवान राम बचपन से ही इस शोधकार्य में लगे हुए थे। इसका वर्णन तुलसीदास जी ने श्रीराम के छोटे भाई श्री लक्ष्मण जी के मुखारबिन्द से बताया है, जिसमें लक्ष्मण जी ने स्पष्ट रूप से कहा है कि वे लोग बचपन में इस प्रकार के धनुषों को वैज्ञानिक क्रियाओं द्वारा खेल—खेल में तोड़ते रहे हैं।

बहु धनुहीं तोरीं लरकाईं। कबहुँ न असि रिसि कीन्हि गोसाईं।।

(1 / 271 / 7)

अतः इस तथ्य की पुष्टि होती है कि भगवान राम ने अपनी वैज्ञानिक योग्यता का प्रयोग करते हुए क्षणमात्र में शिव धनुष को तोड़ दिया। तुलसीदास जी ने निम्नलिखित चौपाई में इसका वर्णन किया है —

लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़ें। काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें।।
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा।।

(1 / 261 / 7—8)

अतः मेरे विचार से धनुष यज्ञ एक वैज्ञानिक ज्ञान की प्रतियोगिता थी न कि बाहुबल का प्रदर्शन।

दृष्टि नहीं दृष्टिकोण सकारात्मक होना चाहिए

एक दिन शिष्य ने गुरु से कहा- एक आदमी आश्रम के लिए गाय दे गया। गुरु ने कहा- अच्छा हुआ, दूध पीने को मिलेगा। एक सप्ताह बाद शिष्य ने आकर गुरु से कहा- जिस व्यक्ति ने गाय दी थी आज वह गाय वापिस ले गया। गुरु ने कहा - अच्छा हुआ, गोबर उठाने के झंझट से मुक्ति मिली। परिस्थिति बदले तो अपनी मनोस्थिति बदल लो। बस दुख सुख में बदल जायेगा। सुख दुख आखिर दोनों मन के ही तो समीकरण हैं। अंधे को मन्दिर आया देख लोग हँसकर बोले- मन्दिर में दर्शन के लिए आए तो हो वापिस चले जाओ क्योंकि तुम तो कुछ देख नहीं पाओगे। अंधे ने कहा- क्या फर्क पड़ता है, मेरा भगवान तो मुझे देख ही लेगा।

रामदूत मैं मातु जानकी

श्रीमती रीता कश्यप, दिल्ली–110096 फोन : 995862992

रामदूत, रामभक्त, महावीर, बजरंगी, हनुमान, संकटमोचन, अंजनीपुत्र, पवनपुत्र आदि–आदि। हम जिस भी नाम से पुकारें, वे हमारी पुकार सुनकर दौड़े चले आते हैं, आएँ भी क्यों न, रामभक्त हनुमान एक भक्त के दिल की पुकार को भला कैसे ठुकरा सकते हैं? श्री हनुमान चालीसा में लिखा है –

संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।

हनुमान के जीवन से जुड़ी बहुत सी पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं। बालपन में भूख लगने पर सूर्य को ही निगल जाना। बचपन में अपने चंचल स्वभाव के कारण अपनी शक्ति को भूल जाने का दण्ड पाना। सीताजी द्वारा उपहार स्वरूप दी गई मोतियों की माला के मोतियों को तोड़–तोड़कर उसमें अपने प्रभु श्रीराम को ढूँढ़ना। राम को प्रसन्न करने के लिए पूरे शरीर पर ही सिन्दूर का लेप कर लेना, अपना सीना चीर कर उसमें बसे श्रीराम के दर्शन करवाना आदि–आदि कई रोचक कथाएँ हनुमान के जीवन से जुड़ी हुई हैं। इन कथाओं से हमें उनके बल, पौरुष, शक्ति, सरलता और भक्ति का अनुमान सहज ही हो जाता है, लेकिन आज हम यहाँ चर्चा करेंगे भगवान श्रीराम के दूत हनुमान की।

भगवान श्रीराम के अनन्य भक्त हनुमान, भक्ति की उस पराकाष्ठा को पा गए हैं कि स्वयं भगवान हो गए हैं। जगह–जगह हनुमान जी के मन्दिरों का होना, उनकी जयन्ती को धूमधाम से मनाया जाना, घर–घर में हनुमान चालीसा का पाठ होना, सुन्दरकाण्ड का पाठ होना, हर मंगलवार को उन्हें प्रसाद चढ़ाना, हर संकट की घड़ी में उन्हें सहायता के लिए पुकारना, मन में प्रश्न उठता है कि वे भगवान के भक्त मात्र हैं या स्वयं भगवान ही हैं? इस संदर्भ में श्रीरामचरितमानस की यह चौपाई उल्लेखनीय है –

मोरें मन प्रभु अस बिस्वासा। राम ते अधिक राम कर दासा।।

(7/120/16)

रामभक्त के रूप में हनुमानजी के बारे में बहुत सी मान्यताएँ प्रचलित हैं। मान्यता है कि जहाँ कहीं भी रामकथा का वाचन होता है, हनुमान जी स्वयं को रोक नहीं पाते, वे वहाँ किसी न किसी रूप में कथा सुनने पहुँच ही जाते हैं। इसीलिए श्रीराम की कथा से पहले हनुमान जी का सादर आह्वान किया जाता है कि आप पधारिये और हमारे साथ आप भी रामकथा का आनन्द लीजिए। सामान्यतया उनका आह्वान इस दोहे से किया जाता है –

हे हनुमान विराजिए कथा होत तुअ आस।
सुचि सेवक तुम्ह राम के हम चरणों के दास।।

प्रभु राम और उनके भक्त हनुमान एक ऐसा उदाहरण है मानो दोनों एक–दूसरे के पूरक हों। तभी तो कहते हैं कि प्रभु राम का नाम जपो तो हनुमान खुश हो जाते हैं और यदि हनुमान का नाम जपो तो भगवान राम की कृपा प्राप्त होती है। राम की भक्ति हनुमान बिना अधूरी है और हनुमान तो राम के बिना स्वयं की कल्पना ही नहीं करते। एक अन्य मान्यता के अनुसार हनुमान जी चिरंजीवी हैं। वे अमर हैं और इसीलिए वे इस कलियुग का एकमात्र सहारा हैं। वे तब तक धरा पर हैं, जब तक कलियुग में भगवान अवतरित नहीं हो जाते। वे अपने प्रभु की प्रतीक्षा में हैं। माँ जानकी का आशीर्वाद है उन्हें कि –

अजर अमर गुननिधि सुत होहू।

(5 / 17 / 3)

अपने प्रभु श्रीराम से उनकी पहली मुलाकात ऋष्यमूक पर्वत पर हुई थी। राम सीताजी की खोज में वनों में भटक रहे थे। उनके भक्त से मानो अपने प्रभु की व्यथा सहन नहीं हुई और वे उनसे मिलने पहुँच गए। वे अपने असली रूप में पहचाने न जाएँ कि वे धरती पर आए ही प्रभु की सहायता के लिए हैं, उन्होंने अपना असली रूप प्रकट न करके एक ब्राह्मण का रूप धारण किया, लेकिन प्रभु से क्या छिपा है और फिर ज्ञान और पाण्डित्य कभी छिपाए छिपा है क्या? अतः वे प्रभु राम द्वारा पहचान लिए जाते हैं। तब वे अपने असली रूप में आ गए और प्रभु श्रीराम के चरणों में गिर पड़े –

प्रभु पहचानि परेउ गहि चरना। सो सुख उमा जाइ नहिं बरना।।

(4 / 2 / 5)

भगवान तो अपने भक्तों के दुख दूर करने अविलम्ब दौड़े चले आते हैं, लेकिन यहाँ भक्ति की चरम अवस्था है कि भक्त अपने भगवान को दुखी देखकर विचलित हो उठे और सैकड़ों मीलों तक फैले अथाह समुद्र को बिना विश्राम किए लाँघ कर सीताजी की खोज–खबर ले आए। इतना ही नहीं, प्रभु को संतप्त करने वाले इतने पराक्रमी रावण को दण्ड स्वरूप उसकी सोने की नगरी लंका का दहन भी कर आते हैं। प्रभु राम के दुख को दिल की गहराइयों तक अनुभव करने की ही तो अभिव्यक्ति है, उनका यह कहना –

राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।।

(5 / 1)

रात बीतने की प्रतीक्षा में स्वयं को पेड़–पौधों में छिपाकर रखने के विचार से बैठे हनुमान, राम के वियोग में परम दुखी सीता माता को देखकर और रावण द्वारा उन्हें डराने–धमकाने की बात सुनकर अपने को रोक नहीं पाते और रावण के जाने के बाद तुरन्त स्वयं को प्रकट कर देते हैं, क्योंकि वे स्वभाव से इतने सरल हैं कि किसी को दुख में देख ही नहीं सकते। सीता को अशोक वाटिका में अपना परिचय देते हुए वे अपना नाम पता, अपने माता–पिता का नाम अथवा अपने कुल का नाम नहीं बताते, बल्कि अपने परिचय में कहते हैं –

राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुनानिधान की।।

(5 / 13 / 9)

स्वयं को राम से जोड़ने में उन्हें जो आनन्द मिलता है और इसी नाते से अपने प्रभु का नाम जपने में उन्हें जो खुशी मिलती है, यहाँ उसी को शब्दों में व्यक्त किया है रामभक्त हनुमान ने। हनुमान की प्रभु भक्ति तथा स्वभाव की सादगी तो देखिए, समुद्र पार जाकर सीता की खबर लाना, उनका संदेश और निशानी लाकर प्रभु को देना और दुष्ट रावण को ही नहीं, बल्कि उसके समूचे राज्य को भयभीत कर आना, जला आना, इतने जोखिम भरे महान कार्य करने के बाद भी वे अपनी कोई बड़ाई नहीं करते, न ही उसके लिए कोई पुरस्कार ही चाहते हैं, बल्कि प्रभु राम द्वारा उपकार मानने और आभार व्यक्त करने पर कहते हैं –

सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछू मोरि प्रभुताई॥

(5/33/9)

इतना ही नहीं, जब श्रीराम जी कहते हैं कि बेटा मैं तुम्हारा ऋणी हो गया, तब वे त्राहि–त्राहि करके चरणों में गिर पड़ते हैं –

सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत॥

(5/32)

हनुमान जी के स्वभाव में निश्छलता और वाणी में कितनी मिठास होगी कि मायावी राक्षसों के बीच रहकर भी सीता माता को उनकी बातों में से छल–कपट और माया की बू नहीं आती। वे तुरन्त विश्वास कर लेती हैं कि वह वास्तव में राम के भेजे दूत ही हैं और उनसे राम और लक्ष्मण के बारे में बातें करने लगती हैं। यही कारण है कि हनुमान से पल भर की पहचान ही उन्हें अपनेपन का अहसास करवा देती है तभी तो हनुमान के लौटते समय सीता दुखी होकर कहती हैं –

तोहि देखि सीतलि भइ छाती। पुनि मो कहुँ सोइ दिनु सो राती॥

(5/27/8)

हनुमान के बल, बुद्धि और पराक्रम का तो कहना ही क्या है। लंका में प्रवेश करते हुए लंकिनी, सुरसा आदि राक्षसियों को जीत लेना, अशोक वाटिका उजाड़ना, रावण के पहरेदारों को ही नहीं, उसके पराक्रमी बेटे अक्षय कुमार को भी मार डालना, इतने पराक्रमी राजा रावण के दरबार में निडर होकर वार्तालाप करना, उसे अपने स्वामी राम के पराक्रम तथा गुणों से परिचित कराना और रावण के हर प्रश्न का निडरता से उत्तर देना, हनुमान के बल, बुद्धि और पौरुष का द्योतक है। उनके वापिस लौट आने पर भी लंका निवासी ही नहीं, बल्कि स्वयं महारानी मंदोदरी भी चिंता में डूब जाती हैं। वे कई प्रकार से अपने पति रावण को समझाने की कोशिश भी करती हैं कि वे सीता को ससम्मान श्रीराम को लौटा दें। श्रीराम से विरोध उन्हें बहुत महँगा पड़ेगा –

तव कुल कमल बिपिन दुखदाई। सीता सीत निसा सम आई।

सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें। हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें।।

(5 / 36 / 9–10)

किसी भी अस्त्र–शस्त्र से न बँध पाने का वरदान पाए हुए भी हनुमान मेघनाद के द्वारा स्वयं को बँधवा लेते हैं, क्योंकि वे कोई भी काम अधूरा नहीं छोड़ना चाहते। वे लंका में आकर सीताजी से मिलकर उनकी सूचना ही राम तक नहीं ले जाना चाहते, बल्कि वे रावण के मन में श्रीराम के प्रति भय भी उत्पन्न करना चाहते हैं। वे उसकी पूरी प्रजा को अपने बल से भयभीत कर देते हैं। लंका को जला कर शत्रु की भारी हानि भी कर आते हैं। शत्रु के मन में भय उत्पन्न करने का सीधा सा अर्थ होता है कि आधा युद्ध बिना लड़े ही जीत जाना। यही काम हनुमान ने अपनी बुद्धि और बल के माध्यम से लंका में किया था। इस कार्य के लिए उन्हें प्रेरणा त्रिजटा के स्वप्न से मिली थी। उसने कहा था –

सपनें बानर लंका जारी। जातुधान सेना सब मारी।।

(5 / 11 / 3)

हनुमान जी संकटमोचन कहे जाते हैं। वे किसी को संकट में देख ही नहीं सकते, यही कारण है कि लक्ष्मण के लिए संजीवनी बूटी लेने वे सैकड़ों मील दूर चल पड़ते हैं। इतनी दूरी को तय समय सीमा में पूरा कर, विभिन्न बाधाओं का सामना करते हुए वे समय पर लौटते भी हैं। इतना ही नहीं, रावण की माया से भ्रमवश वे सही बूटी को पहचान नहीं पाते, लेकिन ऐसे में भी वे खाली हाथ न लौटकर पूरा पर्वतखण्ड ही उठा लाते हैं, ताकि वैद्य स्वयं उसमें से जीवनदायनी संजीवनी बूटी को ढूँढ लें और लक्ष्मण स्वस्थ होकर उनके प्रभु राम के शोक का निवारण करें। कोई भी काम बाधाओं या भय के कारण अधूरा छोड़ देना हनुमान के स्वभाव में ही नहीं है।

हनुमान अपनी भक्ति के कारण भगवान राम के अत्यधिक विश्वासपात्र हैं। एक दूत के रूप में भी उनका कार्य प्रशंसनीय है। दूत के रूप में रावण के दरबार में जाना और अपना कार्य भली–भाँति करना राम को इतना भा गया था कि उन्होंने 14 वर्षों के वनवास के बाद अयोध्या लौटते हुए उन्हें ही अपने भाई भरत के पास अपना दूत बनाकर भेजा था। राम स्वयं भरद्वाज मुनि के दर्शनार्थ रुक जाते हैं और हनुमान को भरत के पास अपने आने की सूचना देकर भेजते हैं। श्रीराम का विचार वास्तव में 14 वर्षों के अंतराल में अयोध्या की स्थिति, भरत के मन की थाह और प्रजाजनों का रुझान जानने का भी था और वहाँ की ठीक–ठीक जानकारी हनुमान ही राम तक पहुँचा सकते थे।

अपार बल, बुद्धि और पराक्रम वाले, कलियुग के एकमात्र आधार, हनुमान जी की स्तुति करते हुए तुलसीदास जी लिखते हैं –

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

(5 / वंदना–3)

मोहि कहाँ बिश्राम

जगदीश प्रसाद शर्मा 'सरल', साहित्याचार्य
116 होशियारपुर, सेक्टर-51, नोएडा फोन : 9311384212

संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं – भाग्यवादी और कर्मवादी। भाग्यवादियों का भाग्य पर बड़ा भरोसा होता है। उनका कहना है कि हमें जो कुछ प्राप्त होता है, वह सब भाग्य से ही मिलता है, इसलिए वे भाग्य को कर्म से भी बड़ा मानते हैं। वे अपनी इस बात को पुष्ट करने के लिये प्रमाण भी देते हैं –

भाग्यं सर्वत्र फलति न विद्या न च पौरुषम्।

(भाग्य ही सब जगह फलता है, विद्या और पुरुषार्थ नहीं)

इस बात को और पुष्ट करने के लिए वे संतशिरोमणि तुलसीदास द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस के इन दोहों का भी उल्लेख करते हैं –

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ।।

(2 / 171)

(महाराज दशरथ की मृत्यु से शोक–संतप्त भरत को होनी की प्रबलता समझाने हेतु ब्रह्मर्षि वसिष्ठ रोते हुये कहते हैं– हे भरत! होनहार बड़ी प्रबल है। हानि–लाभ, जीवन–मरण, यश–अपयश विधाता के हाथ में हैं। हम सब तो उसके हाथ की कठपुतलियाँ हैं। वह हमें जैसे नचा रहा है, वैसे हम विवश हो नाच रहे हैं।)

तुलसी जसि भवतब्यता तैसी मिलइ सहाइ।
आपुनु आवइ ताहि पहिं ताहि तहाँ लै जाइ।।

(1 / 159 ख)

(जो होनी होती है, उसी के अनुसार परिस्थिति बन जाती है। होनी स्वयं उस व्यक्ति के पास नहीं आती, बल्कि उसे ही दुर्घटना–स्थल पर ले जाती है।)

ऐसे लोगों का कथन है – **'जो जो जब जब जैसे जैसे होना है, सो सो तब तब वैसे वैसे होता है।**

भाग्य पर भरोसा करने वाले लोग अकर्मण्य बन जाते हैं। वे आलसी और कायर होते हैं। वे लोग कुतर्क पेश कर भले ही साधारण लोगों को चुप रहने को विवश कर दें, पर हर किसी व्यक्ति को नहीं। एक बार निवृत्त शंकराचार्य सत्यमित्रानंद जी अपने प्रवचन में सुना रहे थे कि हरिद्वार स्थित उनके आश्रम में एक साधु आया। वह कुछ भी काम नहीं करता था। शंकराचार्य ने उस साधु से पूछा – आप काम क्यों नहीं

करते? तो उसने तपाक से उत्तर दिया – हमें काम करने की क्या आवश्यकता है? सबका पालनहार तो ईश्वर है। वह सबका पालन कर रहा है। उस साधु ने यह उदाहरण भी दिया –

अजगर करे न चाकरी पंछी करें न काम।
दास मलूका कह गये सबके दाता राम।।

विद्वान शंकराचार्य ने उसे कर्म का महत्व समझाया, पर उसकी समझ में आया या नहीं, पर वह उसी दिन उनके आश्रम से चला गया।

ऐसे भाग्यवादी लोग यह तो कहते हैं कि भाग्य सर्वत्र फलता है, परन्तु वे यह नहीं जानते कि भाग्य कर्म से ही बनता है यानी कर्म ही भाग्य का जनक है। भाग्य कर्म का ही अंग है, कर्म से अलग नहीं है, अतः कर्म किए बिना मनोरथ सिद्ध नहीं होते। यहाँ इस बात को और स्पष्ट करने के लिए प्रसंगवश कर्म–भेद पर प्रकाश डालना आवश्यक है –

कर्म तीन प्रकार के होते हैं– क्रियमाण, संचित और प्रारब्ध। प्रारब्ध को भावी, होनी, होनहार, भाग्य आदि नामों से पुकारा जाता है। जो कर्म किया जा रहा है, उसे क्रियमाण कर्म कहते हैं। कर्म की क्रिया समाप्त होते ही वह संचित कर्म बन जाता है यानी क्रियमाण कर्म पूरा होते ही प्राणी के कर्म–कोष (अन्तःकरण) में जमा हो जाता है। प्राणियों के कर्म–कोष में केवल इस जन्म में किये हुये कर्म ही संचित नहीं हैं, अपितु जन्म–जन्मान्तरों के कर्म संचित हैं। ईश्वर एक जन्म में प्राणी से जितने कर्म भुगतवाना चाहता है, उतने कर्म प्राणी के संचित कर्मों में से लेकर उनका फल निश्चित कर देते हैं, उन कर्मों को ही प्रारब्ध या भाग्य कहा जाता है यानी जिन कर्मों का फल निश्चित हो जाता है, उन कर्मों को ही भाग्य कहते हैं। फल निश्चित किये बिना कर्म फलता नहीं है, अतः शास्त्र का यह कथन सत्य है – **भाग्यं सर्वत्र फलति।**

इससे यह स्पष्ट होता है कि भाग्य कर्म से ही बनता है अथवा भाग्य कर्म ही है, अतः कर्म न करना उचित नहीं। मनुष्य कर्म करने में तो स्वतंत्र है, परन्तु अपने द्वारा किए गए कर्म का फल अपनी मर्जी से प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि हमारे द्वारा किए गए कर्म का फल कर्मफलदाता ईश्वर के हाथ में है। इसी बात को गीता गायक भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

(2/47)

(हे अर्जुन! कर्म करने में ही तेरा अधिकार है, उनके फलों में कदापि नहीं।)

इसका निचोड़ यही है कि हमें फलाशा त्याग कर अपने समाज और राष्ट्र के हित के लिये कर्म करना चाहिए। यही मानव मात्र का धर्म और कर्तव्य है। मनुष्य कर्म करने से ही महान बनता है, कर्महीनता (विश्राम) करने से नहीं। मनुष्य शुभ कर्म में जितने कष्ट झेलता है, उसे उतना ही गौरव प्राप्त होता है। यही बात कविवर मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं –

जितने कष्ट-कंटकों में है जिनका जीवन-सुमन खिला।
गौरव-गंध उन्हें उतना ही यत्र तत्र सर्वत्र मिला।।

कर्म की महिमा अपार है। मीमांसक तो कर्म को ही ईश्वर मानते हैं। व्यवहार में भी यह बात प्रचलित है – **'कर्म ही पूजा है'** तभी तो मानसकार ने 'मानस' के सुन्दरकाण्ड में कर्मवादी हनुमानजी के मुख से यह दोहा कहलवाया है –

राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।

(5 / 1)

यह दोहा उस प्रसंग में कहा गया है, जब राम–कार्य यानी सीता माता का पता लगाने के लिये लंका जाने के लिए समुद्र पार कर रहे हनुमानजी से मैनाक पर्वत ने उनकी थकान दूर करने के लिये थोड़ा विश्राम करने की प्रार्थना की, तब राम–कार्य में संलग्न हनुमानजी ने मैनाक पर्वत से कहा – भगवान श्रीराम का कार्य पूर्ण किये बिना मुझे विश्राम कहाँ यानी कार्य पूर्ण किए बिना मैं आराम नहीं कर सकता। कर्मवादी, कर्मठ हनुमानजी को कार्य के बीच में आराम करना उचित नहीं लगा।

मैं दोहे की इस अर्धाली के दो शब्दों पर पाठकों का ध्यान आकृष्ट कराना चाहूँगा। वे दो शब्द हैं– 'काजु' और 'बिश्राम'। 'काजु' शब्द का अर्थ है– कार्य और 'बिश्राम' शब्द का अर्थ है – आराम। मैनाक पर्वत ने कार्यरत हनुमानजी की थकान दूर करने के लिये आराम करने को कहा, लेकिन कर्मशील हनुमानजी ने आराम करने से मना कर दिया। इससे सिद्ध होता है कि आराम की अपेक्षा कर्म का अधिक महत्व है।

अब प्रश्न उठता है कि **कर्म क्या है?**

मन, वाणी और शरीर से होने वाली क्रिया कर्म है। कर्म दो प्रकार के होते हैं– दुष्कर्म और शुभ कर्म। शास्त्रानुसार किए गए कर्म शुभ कर्म कहलाते हैं। उन शुभ कर्मों में भी ईश्वरार्पण–कर्म और ईश्वर के लिये किया कर्म यानी ईश्वर का कर्म और भी अधिक शुभ कर्म हैं। शुभ कर्म तत्पर हनुमानजी को राम–कार्य के बीच में आराम करना विघ्न लगा, इसलिए उन्होंने आराम नहीं किया।

इस दोहे से हमें दो शिक्षाएँ मिलती हैं – पहली तो यह कि शुभ कर्म करने में हनुमानजी जैसी आतुरता होनी चाहिए, लेकिन कर्म–लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आतुरता ही पर्याप्त नहीं है। आतुरता के साथ–साथ बल–बुद्धि का होना भी अनिवार्य है, क्योंकि कर्मरत व्यक्ति के मार्ग में विघ्नों का आना स्वाभाविक है। अपने कर्म–लक्ष्य को पाने के लिये पहले बल–बुद्धि द्वारा उन विघ्नों पर विजय प्राप्त करनी होती है, तभी हम कर्म –लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। बल–बुद्धि के निधान रामभक्त हनुमान के सामने भी समुद्र–लंघन–मार्ग में तीन बाधाएँ आयी थीं। वे तीन बाधाएँ – सात्विक, राजसिक और तामसिक थीं ।

सात्विक बाधा व्यक्ति को दुख नहीं देती, बल्कि उसके दुख में राहत पहुँचाने में सहयोग करती है, जैसे मैनाक पर्वत ने रामदूत हनुमानजी की थकान दूर करने के लिये अपने ऊपर विश्राम करने की प्रार्थना

की। कुछ लोग कहेंगे कि फिर इसे बाधा क्यों कहा जाये? इसमें भी अपना–अपना नजरिया है। यदि कोई आराम तलबी से आराम करने को कहे तो आराम तलबी के लिए तो आराम अच्छी बात है, परन्तु कर्मशील कर्मठ व्यक्ति के लिए आराम हराम है। कर्मारूढ़, कर्मनिष्ठ, कर्मठ हनुमानजी ने मैनाक पर्वत के सहयोग को बाधा इसलिए माना कि वह उनके कर्म–लक्ष्य प्राप्ति में विलम्ब उपस्थित कर रहा था, जबकि राम–कार्य–आतुर हनुमानजी अपने लक्ष्य को शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त करना चाह रहे थे। अपने लक्ष्य–प्राप्ति में विलम्ब भी न हो और मैनाक की सहयोग करने की सद्‌भावना को ठेस भी न पहुँचे– यही सोच कर हनुमानजी मैनाक पर्वत का मात्र स्पर्श कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ गए।

आगे जाने पर उनके मार्ग में सर्पों की माता आ अड़ी। वह राजसी बाधा थी। राजसी बाधा व्यक्ति की कड़ी परीक्षा लेती है। सुरसा ने भी हनुमानजी के बल–बुद्धि की थाह लेने के लिये उनकी कड़ी परीक्षा ली। निगलने की बात कह कर उन्हें भयभीत करना चाहा, परन्तु महाकालेश्वर के अवतार को भय कैसा। पहले तो उन्होंने उसे विनीत स्वर में समझाया। जब वह समझाने पर भी न मानी, तब फिर अपने बल–बुद्धि का प्रदर्शन कर परीक्षा में खरे उतर कर उसे संतुष्ट किया और उसका आशीर्वाद प्राप्त कर आगे बढ़ चले –

राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिष देइ गइ सो हरषि चलेउ हनुमान।।

(5/2)

आगे बढ़ने पर मार्ग में तीसरी बाधा राक्षसी के रूप में आयी। वह तामसिक बाधा थी। तामसिक बाधा प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देती, बल्कि वह अदृश्य होकर छल से व्यक्ति के प्राण लेती है। हनुमानजी के साथ भी यही हुआ। उस अदृश्य मायाविनी ने छल से हनुमानजी की परछाईं को पकड़ लिया। इससे हनुमानजी की गति रुक गई, पर उनकी पैनी दृष्टि से वह ओझल न रह सकी। फिर क्या, महावीर उसका वध कर आगे बढ़ गये और समुद्र के उस पार पहुँच गए।

प्राणी के जीवन–मार्ग में बाधाओं का आना तो स्वाभाविक है, परन्तु धैर्यवान कर्मठ पथिक को बाधाएँ रोक नहीं सकतीं। इसी भाव से ओत–प्रोत कविता सुंदरी की एक झलक देखिये –

धैर्य का पाथेय लेकर जो पथिक
विघ्न-अचलों को कुचलता पथ चला।
कर्म-पथ-आरूढ कर्मठ लक्ष्य ले
रोक पाया कौन उसका पथ भला।।

– सरल

आखिर सफलता ने हनुमानजी के चरण चूमे।

व्यथा–वेदना ऐसी पाठशालाएँ हैं, जिनमें जीवन के जो पाठ सीखने को मिलते हैं, वे बड़े–बड़े विश्वविद्यालयों में भी नहीं मिलते। संघर्ष व्यक्ति को सफलता के उच्च शिखर पर ले जाता है और आराम

व्यक्ति का पतन करता है। मेरे विचार में तो जिस मानव–जीवन में संघर्ष न हो तो उसे भले ही किसी और नाम से पुकार लो, परन्तु उसे मानव–जीवन न कहो। इसी भाव की काव्यमय झलक देखिये –

जिसमें प्रति पल संयोग रहा क्षण भर का हुआ वियोग न हो।
कोमल फूलों के हार मिले झेली कंटक की चुभन न हो।।
छायी हो शान्ति तपोवन सी लेकिन जिसमें संघर्ष न हो।
तो भले और कुछ भी कह लो उसको मानव-जीवन न कहो।।

– सरल

तीसरी बाधा के विषय में यदि विज्ञान के दृष्टिकोण से कहा जाए तो अपने समय के महान वैज्ञानिक रावण ने शत्रु पर दृष्टि जमाए रखने के लिये कोई राडार या रोबोट जैसा संयंत्र समुद्र में स्थापित कर रखा होगा। समुद्र के जल के अन्दर इसलिए कि उस पर किसी शत्रु की दृष्टि तक न पड़े और वह शत्रु को विफल करने में सफल रहे। इस कथन में कोई अतिशयोक्ति भी नहीं है, क्योंकि श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण के अनुसार उस समय भूमंडल में पुष्पक विमान, विद्युत दीपों का प्रकाश केवल रावण की लंका में ही था। इनके अतिरिक्त लंका के मुख्य द्वार पर स्वचालित यंत्र लगे हुए थे, जो शत्रु–सेना पर बाणों और पत्थरों की भयंकर वर्षा कर शत्रु–सेना को धराशायी कर देते थे। कहने का तात्पर्य यह है कि लंका की सुरक्षा की वैज्ञानिक पद्धति से अति सुदृढ़ अद्भुत व्यवस्था थी।

त्रिलोकविजयी रावण की उस अकल्पित अद्भुत सुरक्षा–व्यवस्था को ध्वस्त करने में हनुमानजी इसलिये सफल रहे कि वे कोई साधारण प्राणी नहीं हैं, अपितु वे तो वैज्ञानिक रावण के श्रद्धास्पद गुरुदेव विश्व के महावैज्ञानिक भगवान शिव के अवतार हैं। लंका की उस अद्भुत सुरक्षा–व्यवस्था को ध्वस्त कर अभिमानी रावण का मनोबल तोड़ना ही अशोक वाटिका को उजाड़ने का उद्देश्य था, क्योंकि हनुमानजी लंका में केवल अन्वेषक बनकर ही नहीं गए थे, बल्कि वे रामदूत बनकर भी गए थे और दूत का कर्तव्य होता है– शत्रु की शक्ति का पता लगा कर उसका मनोबल तोड़ना। यही तो हनुमानजी ने किया था।

उक्त दोहे से दूसरी शिक्षा यह मिलती है कि हमें कार्यपूर्ण करने के बाद में ही विश्राम करना चाहिए। लोक में भी यह कथन प्रसिद्ध है– **पहले काम फिर आराम।** इसी उक्ति को सार्थक करने के लिए ही हनुमानजी ने मैनाक पर्वत से कहा होगा –

राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।

(5/1)

हनुमानजी सागर पार तो पहुँच चुके थे, परन्तु अभी राम–कार्य पूर्ण नहीं हुआ था, आंशिक सफलता ही हाथ लगी थी। इसी बात को आज के लहजे में कहा जाये तो सागर–पार करना तो ट्रेलर था, अभी तो पूरी पिक्चर बाकी पड़ी थी। आइए अब उसी पूरी पिक्चर का दर्शन कराते हैं –

सागर के उस पार पहुँचते ही एक विशाल पर्वत पर चढ़ कर हनुमानजी ने लंका पर अपनी पैनी दृष्टि डाली। लंका की सुरक्षा–व्यवस्था इतनी सुदृढ़ थी कि कोई परिंदा भी पर तक नहीं मार सकता था, अतः दिन में लंका में प्रवेश करना असंभव था। फिर भी राम–कार्य को आतुर हनुमान आराम न कर अपनी भावी योजना को साकार करने के लिए विहंगम–दृष्टि से लंका नगरी का गहन निरीक्षण करने लगे।

हनुमानजी भगवान राम के सच्चे सेवक हैं और सच्चा सेवक वही कहलाता है जो अपने स्वामी की निस्स्वार्थ अहिर्निशि सेवा करे और स्वामी का कार्य करने को आतुर रहे। महात्मा तुलसीदास हनुमान चालीसा में लिखते हैं – **राम काज करिबे को आतुर।** हनुमानजी श्रीराम का कार्य करने के लिए बड़े आतुर रहते हैं। वे अपार बलशाली, कर्मवादी, कर्मनिष्ठ और कर्मठ हैं। उनकी वीरता और पराक्रम के रामायण में कितने ही उदाहरण भरे पड़े हैं, जैसे – जब ऋषि–शाप के कारण अपने बल को भूले हुए हनुमानजी को जामवंत ने उनके बल का स्मरण कराया, तब अपने विस्मृत बल की स्मृति होते ही वे पर्वताकार हो गए और मरणासन्न वानरों का धैर्य बँधाने के लिए अपने बल–पराक्रम का वर्णन करते हुए बोले ––

लंघयित्वा जलनिधिं कृत्वा लंका च भस्मसात्॥
रावणं सकुलं हत्वाऽऽनेष्ये जनकनन्दिनीम्।
यद्वा बद्ध्वा गले रज्ज्वा रावणं वामपाणिना।
लंकां सपर्वतां धृत्वा रामस्याग्रे क्षिपाम्यहम्।
यद्वा दृष्टैव यास्यामि जानकीं शुभलक्षणाम्॥

(अध्यात्म रामायण)

(वानरो! मैं समुद्र को लाँघ कर लंका को भस्म कर डालूँगा और रावण को कुल सहित मार कर श्रीजनकनन्दिनी को ले आऊँगा। आप कहो तो रावण के गले में रस्सी बाँधकर श्रीराम के आगे ला रखूँ अथवा शुभलक्षणा सीताजी को देख कर ही चला आऊँ।)

जाम्बवान ने कहा – वीर! तुम केवल जानकीजी को ही देखकर चले आओ। कुछ शंकालुओं के मन में शंका उठ रही होगी कि हनुमानजी वानरों से अपनी वीरता की डींग हाँक रहे हैं, परन्तु वे डींग नहीं हाँक रहे। सच तो यह है कि अतुलित बलशाली हनुमानजी तो अपने आंशिक बल का ही वर्णन कर रहे हैं। ऐसा नहीं कि वे अपने साथी वानरों के सामने ही शेर बन रहे हों, अपितु अशोक–वाटिका में राक्षसों से युद्ध करते समय 80,000 वीर राक्षसों से घिरे होने पर भी वे अपने बल–पराक्रम का परिचय देते हुए कहते हैं –

न रावणसहस्रं मे युद्धे प्रतिबलं भवेत्।
शिलाभिश्च प्रहरतः पादपैश्च सहस्रशः॥

(वाल्मीकीय रामायण)

(जब मैं हजारों वृक्षों और पत्थरों से प्रहार करने लगूँगा, तब हजारों रावण भी युद्ध में मेरे बल की समानता नहीं कर सकते यानी मेरा सामना नहीं कर सकते।)

हनुमानजी का यह कथन मात्र ही नहीं है, अपितु उन्होंने प्रत्यक्ष करके भी दिखाया। जब रावण ने उन्हें दंडित करने के लिए उनकी पूँछ में कपड़े लिपटवा कर आग लगवा दी, तब हनुमानजी उन सबकी आँखों के सामने उनकी स्वर्णमयी लंका को जला कर सुरक्षित लौट आए। लंकापति रावण और इन्द्रजीत मेघनाद सहित समूचे राक्षस भी उनका बाल–बाँका तक न कर सके।

रणांगण में मेघनाद द्वारा छोड़ी प्रचंड शक्ति से लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर हनुमान का रात ही रात में लंका से हजारों किलोमीटर दूर हिमालय पर्वत से संजीवनी बूटी लाना और अहिरावण को मारकर पाताल से राम–लक्ष्मण को छुड़ा लाना उनके अद्‌भुत पराक्रम के ज्वलंत प्रमाण हैं।

अब लौट कर पुनः मुख्य विषय पर आते हैं कि हनुमानजी ने समुद्र पार कर, लंका की सुदृढ़ सुरक्षा–व्यवस्था को ध्वस्त कर सीता माता का पता लगा कर, रावण से मिलने के लिए राजोद्यान (अशोक वाटिका) उजाड़ कर और उस अभिमानी शत्रु का मनोबल तोड़ने के लिए लंका को भस्मसात करने के बाद ही यानी राम–कार्य करने के पश्चात् ही समुद्र में कूदकर अपनी थकान मिटाई थी –

पूँछ बुझाइ खोइ श्रम।

(5/26)

अतः यह कहा जा सकता है कि हनुमानजी की कथनी–करनी समान हैं। उन्होंने जो कहा सो करके दिखाया।

उन्होंने मैनाक पर्वत से कहा था –

राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।

(5/1)

शोक समाचार

हमें अत्यंत दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि इस समिति के वरिष्ठ सदस्य **श्री राधेश्याम जी** की माताजी सोमवार, श्रावण कृष्णा दशवीं संवत् 2075 तदनुसार 06 अगस्त सन् 2018 को चिर निद्रा में लीन हो गईं। इस समिति की ओर से हम उनकी आत्मा की शान्ति के लिए तथा उनके परिजनों एवं मित्रों को धैर्य प्रदान करने हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

जिसको भगवान की कृपा पर भरोसा है और उसके न्याय पर विश्वास है,
उसको संसार की कोई भी स्थिति विचलित नहीं कर सकती।

With best compliments from

Dr. Virendra Singh
Managing Director
9999814220, 8178080605, 8588831777
E Mail Id : mml@maxmaintenanceltd.com

MAX MAINTENANCE LIMITED

(AN ISO 9001:2008 CERTIFIED ORGANIZATION)

OUR SERVICES

- Annual Repair and Maintenance (Any Type of Building)
- Cleaning, House Keeping (Sanitation Services)
- Office Furniture Supply Services
- Computer (IT) Services
- Security Guard Services (Providing Ex-Serviceman Security Staff)
- Bouncers, Bodyguards, Commandos, Personal Security Officers(PSO)
- Arms Guard (Gun Man) Services
- Cash Van/ATM Banking Services

CORPORATE OFFICE
D-7, Sector 7, Noida-201301, G.B.Nagar (U.P.) India
Mob : 08588831761 Phone : 0120-4297109, 4297110
Website : www.maxmaintenanceltd.com, E Mail Id: mml@maxmaintenanceltd.com
sales@maxmaintenanceltd.com, support@maxmaintenanceltd.com

GURGAON OFFICE
F 30, First Floor, Raheja Square, Sector 2
IMT Manesar, Distt Gurgaon(Haryana) Phone : 0124-4235679

DELHI OFFICE
C 5/99-100, New Kondli (Opp Petrol Pump), Delhi - 110096
Phone : 011-22610095

श्रीलक्ष्मण और देवी उर्मिला का त्याग

पं0 गोपाल कृष्ण पण्डया,
उज्जैन (म0प्र0) फोन : 9009741987

श्रीरामचरितमानस में रामसेवाव्रती श्रीलक्ष्मण जी का उनकी धर्मपत्नी श्रीउर्मिला देवी जी का त्यागमय चरित्र बड़ा ही अनुपम है। लोग कहेंगे कि उर्मिला के चरित्र का तो रामायण में कहीं वर्णन ही नहीं आया है, फिर वह अनुपम कैसे हो गया? वास्तव में उनके चरित्र के सम्बन्ध में कवि का मौनावलम्बन ही चरित्र की परम उच्चता का सूचक है। उनका चरित्र इतना महान त्यागपूर्ण है कि कवि की लेखनी उसका चित्रण करने में अपने को असमर्थ पाती है। सीता जी श्रीराम के साथ वन जाने के लिए आग्रह करती हैं और न ले जाने पर प्राण–परित्याग के लिये प्रस्तुत हो जाती हैं। यद्यपि ऐसा करना उनका अधिकार था और इसीलिये श्रीराम अपने पहले वचनों को पलट कर उन्हें साथ ले गए। श्रीराम ने जो सीताजी को घर–नैहर में रहने का उपदेश दिया था, सो तो लोक शिक्षा, सती पतिव्रता के परम आदर्श की स्थापना और पत्नी के प्रति पति के कर्तव्य की सत्–शिक्षा के लिये था। वास्तव में सीता को श्रीराम जी वन में ले जाना ही चाहते थे, क्योंकि उनके गए बिना रावण अपराधी नहीं होता और ऐसा हुए बिना उसकी मृत्यु असम्भव थी, जो अवतार–धारण का एक कार्य था। श्रीसीता जी साक्षात जगन्नायिका और श्रीराम सच्चिदानन्दघन हैं। वह उनसे अलग कभी रह ही नहीं सकतीं। वास्तव में श्री सीताराम कहने–सुनने के लिए भिन्न हैं, पर हैं एक, जैसा कि 'मानस' के वंदना प्रकरण में लिखा है –

गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न।
बंदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न।।

(1 / 18)

केवल पतिव्रत की बात होती तो सीताजी भी शायद उर्मिला की भाँति अयोध्या में रह जातीं। उर्मिला सीताजी की छोटी बहिन थीं, परम पतिव्रता थीं। बड़ी बहिन सीताजी जैसे अपने स्वामी श्रीराम में अनुरक्ता और उनकी सेवाव्रत धारिणी थीं, वैसे ही उर्मिला भी थीं, वे भी सीता की भाँति ही साथ जाने के लिए प्रेमाग्रह कर सकती थीं, परन्तु उनके घर रहने में ही श्रीराम काज में सुविधा थी, जिसमें सेवक बनकर रहना उनके पति का एकमात्र धर्म था और जिसमें उर्मिला पूर्ण सहमत और सहायक थीं। इन्द्रजित–मेघनाद को वरदान था कि जो महापुरुष लगातार बारह वर्ष तक फल–मूल खायेगा, निद्रा का त्याग करेगा और अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करेगा, उसी के हाथों से मेघनाद का मरण होगा। इसलिये जैसे रावण–वध में कारण बनने के लिये सीताजी का श्रीराम–लीला में सहयोगिनी बनकर वन जाना आवश्यक था, वैसे ही लक्ष्मण जी का श्री रामलीला में शामिल होने के लिये तीव्र महाव्रत पालनपूर्वक मेघनाद–वध के लिये वन जाना आवश्यक था

और ठीक इसी तरह उर्मिला जी को भी रामलीला को सुचारु रूप से सम्पन्न कराने के लिये ही, पति के जीवन के व्रत को ध्यान में रखते हुए घर पर रहना आवश्यक था। उर्मिला जी साथ जातीं, तब भी लक्ष्मण जी का महाव्रत पालन होता, किन्तु श्रीराम सेवा में वे बाधा नहीं बनना चाहती थीं। यही उनके त्याग का महत्व है। यह बात श्रीलक्ष्मण जी ने उर्मिला जी को अवश्य समझा दी होगी या महान विभूति होने के कारण वे इस बात को समझती ही होंगी। इसी से उन्होंने पति के साथ जाने के लिये एक शब्द भी न कहकर आदर्श पतिव्रत धर्म का वैसा ही पालन किया, जैसा श्रीसीता जी ने साथ जाने के लिये प्रेमाग्रह करके किया था। घर रहने में ही पति श्रीलक्ष्मण जी का सेवाधर्म सम्पन्न होता है, जिन श्रीराम की सेवा के लिये लक्ष्मण जी अवतीर्ण हुए थे, वह सेवाकार्य इसी में सफल होता है। यह बात जानने के बाद आदर्श पतिव्रता देवी उर्मिला कैसे कुछ कह सकती थीं? वे आजकल की भाँति भोग की भूखी तो थीं ही नहीं। पति की धर्मरक्षा में सहायक होना ही पत्नी का धर्म है, इस बात को वे खूब समझती थीं और यही उर्मिला जी ने किया।

लोग कहते हैं कि 'लक्ष्मण बड़े निष्ठुर थे, राम तो सीता को साथ ले गये, परन्तु लक्ष्मण ने तो उर्मिला से बात तक नहीं की।' पर वे क्या बात करते। वे इस बात को खूब जानते थे कि मेरा और मेरी पत्नी का एक ही धर्म है और वह है 'श्रीसीताराम की सेवा'। मेरे धर्मपालन में मद्‌गतप्राणा कर्त्तव्यपरायणाप्रेममयी उर्मिला को सदा ही बड़ा आनन्द है। वह धर्म के लिये सानन्द मेरा विछोह सह सकती है।

जनकपुर से ब्याह कर आने के बाद बारह वर्षों में लक्ष्मण जी की अनुगामिनी सती उर्मिला ने अपना रामसेवा धर्म निश्चय कर लिया था, उसी निश्चय के अनुसार पति को रामसेवा में भेजने के लिये वीरांगना उर्मिला भी उसी प्रकार सहमत और प्रसन्न थीं, जैसे लक्ष्मण–माता वीर–प्रसविनी देवी सुमित्रा जी प्रसन्न थीं। धर्मपरायण वीरांगनाएँ अपने पति–पुत्रों को हँसते–हँसते रणांगण में भेजा ही करती हैं, वैसे ही यहाँ सुमित्रा और उर्मिला ने भी किया। जब लक्ष्मण जी माता सुमित्रा से सशंकित मन से विदा माँगने जाते हैं, तब वे उनकी शंका दूर करते हुए यह उपदेश देती हैं –

तात तुम्हारि मातु बैदेही। पिता रामु सब भाँति सनेही॥
अवध तहाँ जहँ राम निवासू। तहँइँ दिवसु जहँ भानु प्रकासू॥
जौं पै सीय रामु बन जाहीं। अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं॥

(2/74/2–4)

अवश्य ही उर्मिला कुछ बोली नहीं, परन्तु यहाँ न तो बोलने का अवकाश ही था और न धर्म में नित्य हार्दिक सम्मति होने के कारण बोलने की आवश्यकता ही थी तथा न मर्यादा ही ऐसी आज्ञा देती थी। सेवा–धर्म में तत्पर निःस्वार्थ सेवक को तुरन्त करने योग्य प्रबल मन चाहा सेवाकार्य सामने आ पड़ने पर सलाह मशविरे के लिये न तो अवकाश ही रहता है और न उनकी सहधर्मिणी पत्नी भी इससे बुरा मानती है, क्योंकि वह अपने पति की स्थिति से भली–भाँति परिचित होती है और उसके प्रत्येक त्यागपूर्ण महान कार्य का अनुमोदन करना ही अपना धर्म समझती है।

एक बात और है, सेवक परतन्त्र होता है। स्वामी श्रीराम तो स्वतन्त्र थे, वे अपने साथ जानकी जी को ले गए। परन्तु परतंत्र सेवापरायण लक्ष्मण भी यदि उर्मिला को साथ ले जाना चाहते तो यह अनुचित होता, उन्हें रामजी की सम्मति लेनी पड़ती, जहाँ वन में श्रीराम जी सीताजी को साथ ले जाने में ही आपत्ति करते थे, वहाँ उर्मिला को साथ ले जाने में कैसे सहमत होते? जो कार्य स्वामी की रुचि के प्रतिकूल हो, उसकी कल्पना भी सच्चे सेवक के चित्त में उत्पन्न नहीं हो सकती। इसी प्रकार पति की रुचि के प्रतिकूल कल्पना सती पतिव्रता पत्नी के हृदय में उठ ही नहीं सकती। उर्मिला परम पतिव्रता थीं, लक्ष्मण उनको जानते थे। धर्म पालन में उनकी चिरसम्मति उन्हें प्राप्त थी। एक बात यह भी है कि लक्ष्मण जी सेवा के लिये वन जाना चाहते थे, सैरसपाटे के लिये नहीं। पत्नी को साथ ले जाने से उसकी देखभाल में भी इनका समय जाता तथा दो स्त्रियों के सँभालने का भार श्रीराम पर पड़ता। सेवक अपने स्वामी को संकोच में कभी नहीं डाल सकता। इसका प्रमाण 'चित्रकूट' के प्रसंग में श्रीराम–भरत संवाद में मिलता है। भरत जी कहते हैं जो सेवक अपने स्वामी को संकोच में डालता है उसकी बुद्धि खोटी है –

जो सेवकु साहिबहिं सँकोची। निज हित चहइ तासु मति पोची।।
सेवक हित साहिब सेवकाई। करै सकल सुख लोभ बिहाई।।

(2 / 268 / 3–4)

लक्ष्मण जी और उर्मिला जी दोनों ही इस तथ्य को अच्छी तरह समझते थे। अतएव उन्होंने कोई निष्ठुरता का बर्ताव नहीं किया, प्रत्युत इसी में लक्ष्मण जी और उर्मिला जी दोनों के त्यागमय जीवन की सच्ची महिमा है।

वनवास में श्री लक्ष्मण जी के व्रतपालन का महत्व देखिये। वे दिन–रात श्रीसीताराम के पास रहते हैं। कन्द–मूल–फल लाकर देना, पूजा की सामग्री जुटा देना, आश्रम को झाड़ना–बुहारना, वेदिका पर चौका लगा देना, श्रीसीता–राम की रुचि के अनुसार उनकी हर प्रकार की सेवा करना और दिन–रात सजग रहकर वीरासन से बैठे रहना, राम में मन लगाये रहना, राम–नाम जपते हुए पहरा देना ही उनका कार्य है। वे अपने कार्य में बड़े ही तत्पर हैं। ब्रह्मचर्य व्रत का पता तो इसी से लग जाता है कि माता सीता की सेवा में सदा प्रस्तुत रहने पर भी उन्होंने उनके चरणों को छोड़ कर अन्य किसी अंग का कभी दर्शन ही नहीं किया। यह बात इससे सिद्ध है कि लक्ष्मण जी सीताजी के गहनों को नहीं पहचान सके। जब रावण श्रीसीताजी को आकाश मार्ग से ले जा रहा था, तब उन्होंने पहाड़ पर बैठे हुए वानरों के दल में कुछ गहने डाल दिये थे। श्रीराम–लक्ष्मण सीता को खोजते हुए जब हनुमान जी की प्रेरणा से सुग्रीव के पास पहुँचे, तब सुग्रीव ने श्रीराम को वे गहने दिखलाए। श्रीराम के पूछने पर लक्ष्मण जी बोले –

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले।
नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्।।

(वा० रा० 4 / 6 / 22–23)

स्वामिन्! मैं इन केयूर और कुण्डलों को नहीं पहचानता। मैंने तो प्रतिदिन चरणवन्दन के समय माता जी के केवल नूपुर ही देखे हैं, अतः उन्हें पहचान सकता हूँ। आजकल के देवरों को इससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। श्रीलक्ष्मण जी के इस महान व्रत पर श्रीराम का बड़ा विश्वास था, इस बात का पता इसी से लगता है कि वे मर्यादापुरुषोत्तम होने पर भी लक्ष्मण जी के साथ सीताजी को अकेले बेधड़क छोड़ देते थे। जब खर–दूषण भगवान के साथ युद्ध के लिये आये थे, तब श्रीराम ने जानकी जी को लक्ष्मण जी की संरक्षणता में एकान्त गिरिगुहा में भेज दिया था –

धूरि पूरि नभ मंडल रहा। राम बोलाइ अनुज सन कहा।।
लै जानकिहि जाहु गिरि कंदर। आवा निसिचर कटकु भयंकर।।

(3 / 18 / 10–11)

माया मृग को मारने के समय भी सीता के पास आप लक्ष्मण जी को छोड़ गये थे और उनके निर्वासन के समय भी लक्ष्मण जी को ही सीता के साथ भेजा था।

लक्ष्मण जी का सेवा–व्रत तपपूर्ण था। उन्होंने सम्पूर्ण वनवास काल में लगातार श्रीराम सेवा में तत्पर रहकर कठिन तपस्या की। इसी कारण वे मेघनाद को मारकर राम–काज में सहायक बन सके। तपस्या में उनका उद्देश्य भी यह था, क्योंकि वे श्रीराम को छोड़कर दूसरी बात न तो जानते थे और न जानना चाहते ही थे। उन्होंने वन साथ जाने के लिये श्रीराम जी द्वारा मना करने पर यह कहा –

गुर पितु मातु न जानउँ काहू। कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू।।
जहँ लगि जगत सनेह सगाई। प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई।।
मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी। दीनबंधु उर अंतरजामी।।
धरम नीति उपदेसिअ ताही। कीरति भूति सुगति प्रिय जाही।।
मन क्रम बचन चरन रत होई। कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई।।

(2 / 72 / 4–8)

इसे सुनकर ही श्रीराम जी ने उन्हें साथ चलने की आज्ञा दी।

शोक समाचार

हमें अत्यंत दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि इस समिति के सम्माननीय सदस्य **श्री शिव कुमार शर्मा** के पिताजी सोमवार, श्रावण कृष्णा दशवीं संवत् 2075 तदनुसार 06 अगस्त सन् 2018 को चिर निद्रा में लीन हो गए। इस समिति की ओर से हम उनकी आत्मा की शान्ति के लिए तथा उनके परिजनों एवं मित्रों को धैर्य प्रदान करने हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

करम प्रधान बिस्व करि राखा

डॉ0 भगवान दास पटैरया, महासचिव

यह संसार एक रंगमंच है, जिस पर हम सभी विभिन्न पात्रों के रूप में इस जगत्–नाट्यशाला में अभिनय करते हैं। आदि, अनादि, परब्रह्म, परमात्मा के अंश हम सभी लोग माया के फंदे में फँस कर अपने–अपने कर्मों के अनुसार कठपुतली की तरह नाच रहे हैं, जिसकी डोर भगवान के हाथ में है, जो हमें पूर्वकृत कर्मों के अनुरूप भोग करा रहे हैं। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

ईस्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी।।
फिरत सदा माया कर प्रेरा। काल कर्म सुभाव गुन घेरा।।

(7/117/2 तथा 7/44/5)

मानव योनि कर्म योनि है, अन्य सभी भोग योनियाँ हैं। हम कर्म करने में स्वतंत्र हैं। यदि अच्छे कर्म करेंगे तो सुख की प्राप्ति होगी, दुष्कर्म करेंगे तो दुख की प्राप्ति होगी। इसी को शास्त्रों में स्वर्ग या नरक की संज्ञा दी गई है। स्वर्ग या नरक चाहे कोई लोक हो या नहीं, जहाँ पर मरणोपरांत सुख–दुख का भोग कराया जाता है, पर यह तो निर्विवाद है कि जो जैसा कर्म करेगा, उसको वैसा फल निश्चित रूप से प्राप्त होगा। अच्छे और बुरे कर्मों का फल मिलने का विधान सर्वथा सत्य है। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा।।

(2/219/4)

भगवान के घर देर हो सकती है, पर अंधेर नहीं है, यह कहावत शत–प्रतिशत सत्य है। आसक्ति, ममता, स्वार्थ इत्यादि वासनाओं को त्याग कर निष्काम कर्म करने से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। जन्म–मरण के चक्कर से छूटने का यही एक उपाय है और यही मोक्ष है। कर्म का स्वरूप अति गहन है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि कर्म क्या है, अकर्म क्या है और विकर्म क्या है? इस प्रकार इसका निर्णय करने में बुद्धिमान पुरुष भी मोहित हो जाता है। अतः कर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए और अकर्म तथा विकर्म का स्वरूप भी जानना चाहिए, क्योंकि कर्म की गति गहन है –

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणोगतिः।

(गीता 4/17)

अच्छा–बुरा पहचानने में हमारी बुद्धि भ्रमित हो जाती है, किन्तु जब हमारे मन में स्वार्थ भावना न हो और हम विश्व बन्धुत्व तथा सर्वहिताय दृष्टिकोण से विचार करते हुए कर्म करते हैं, उस कर्म का स्वरूप जन

कल्याणकारी होता है। यदि हम हर कार्य करते समय ऐसा स्मरण रखें कि इस कार्य से जनहित हो रहा है तो यही भक्ति है, क्योंकि कर्म ही पूजा है, कर्मयोग का यही महत्व है और यही भगवत् प्राप्ति का द्योतक है। यह सर्वविदित है कि किसी की हत्या करना पाप है और सांसारिक न्यायालय भी इसके लिए मृत्युदंड की सजा देते हैं, पर जब एक सैनिक अपने देश की रक्षार्थ दुश्मन पर गोली चलाता है और अपनी वीरता से दुश्मनों पर विजय प्राप्त करता है अथवा स्वयं वीरगति को प्राप्त हो जाता है, तब उसे परम वीर चक्र से सम्मानित किया जाता है। इस प्रकार कर्म का स्वरूप कुछ भी हो, जो सर्वजनहिताय हो, वही वंदनीय है।

हमारे समक्ष मुख्य प्रश्न यह है कि दूसरों को सताने वाले, अन्याय से धनोपार्जन करने वाले लोग सुखी क्यों दिखाई देते हैं? इसका बहुत ही सीधा और स्पष्ट उत्तर है, दूसरों को दुख देने वाला, निर्बल को सताने वाला, दीन को दुखी करने वाला, कभी सुख–संतोष प्राप्त कर ही नहीं सकता है। गरीबों का खून चूस–चूस करके बड़े–बड़े भवनों में रहने वाले, बड़ी–बड़ी गाड़ियों में घूमने वाले सुखी दिखाई देते हैं, पर क्या वास्तव में वे सुखी हैं? ऊपर से देखने में ठाठ बाट से वे बहुत सुखी दिखाई देते हैं, परन्तु अंदर से कितने दुखी हैं हम उसकी कल्पना नहीं कर सकते हैं। उनकी अन्तरात्मा उनके दुष्कर्मों को सदा कोसती रहती है। वे अंदर ही अंदर दुख की ज्वाला में जलते रहते हैं। द्वेष, वैर एवं विद्रोह की भावनाएँ सदा उनके मन में बसती हैं। सुख–शांति के उन्हें दर्शन नहीं होते हैं। यह निश्चित है कि जब अमन चैन चाहते हैं तो अमन चैन कहाँ मिलेगा, सोचना होगा। जब हम दूसरे का अमन चैन छीनते हैं तो हमें कभी अमन चैन नहीं मिल सकता है। एक कवि के अनुसार –

अमन जिधर रखा उधर जाते नहीं, अमन कैसे मिले।
लगन राम जी से लगाते नहीं, अमन कैसे मिले।।

इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि हमें अच्छे–बुरे कर्मों का फल निश्चित रूप से मिलता है। देर–सबेर हो सकती है, उसके भी विभिन्न कारण हैं। वेदान्त दर्शन के अनुसार कर्म के तीन स्वरूप होते हैं– क्रियमाण, संचित और प्रारब्ध। हम मानव योनि में जो भी कर्म करते हैं वे पूर्ण होने पर तुरंत कर्मकोष में जमा हो जाते हैं। उन्हें संचित कर्म कहते हैं। अनंत जन्मों के कर्मों का संचयन है– संचित और इस जन्म में पाप–पुण्य के अनुसार फलभोग हेतु संचित का एक अंश प्रारब्ध है, जिसे भाग्य कहते हैं। इस प्रकार भाग्य के निर्माता हम स्वयं ही हैं। श्रीरामचरितमानस के अनुसार –

काहु न कोउ सुख दुख दाता। निज कृत करम भोग सबु भ्राता।।

(2/92/4)

इस जन्म में दुष्कर्म करने पर भी प्रारब्ध के प्रभाव से सफलता मिल सकती है, पर नवीन दुष्कर्म का फल निश्चित रूप से आगे भोगना पड़ेगा, यह सभी शास्त्रों का निर्विवाद मत है। हम सांसारिक न्यायालय की दृष्टि से बचकर अपने आप को अपराधों की सजा से बचा सकते हैं, किंतु हमें ईश्वरीय न्याय के अनुसार तो सजा मिलेगी ही। यदि इस जन्म में न मिल सकी तो अगले जन्म में मिलेगी। यही है कर्म का रहस्य,

क्योंकि कोई भी कर्मफल–भोग से बच नहीं सकता है। कर्म के इस रहस्य को समझकर दुख–सुख, हानि–लाभ में समान भाव रखते हुए सर्वहिताय कर्म करना चाहिए। जिस प्रकार से भुने हुए चनों में अंकुर नहीं फूटता है, उसी प्रकार से जब समबुद्धि होती है, सर्वहितकारी कार्य होता है, अपना स्वार्थ नहीं होता है तभी निष्काम भाव से कर्म किया जाता है। उसका भी फिर कोई फल नहीं होता है और तब मनुष्य जन्म–मृत्यु के भवजाल से छूट जाता है।

अतः हमारा परम कर्तव्य है कि हम निःस्वार्थ भाव से, निष्काम भाव से, परोपकारार्थ, लोकहित में, आसक्ति रहित होकर अपने कर्म का संपादन करें। जो दायित्व प्राप्त है, जो काम हमें दिया गया है, उस काम को हम निष्काम भाव से करें। इससे ही सुर दुर्लभ मोक्ष प्राप्त होता है। इस कर्म के रहस्य को समझ कर के कार्य संपादन करने से आत्मानंद की प्राप्ति होती है और जीते जी मनुष्य निर्वाणपद अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

दैनिक जागरण, 26 मार्च 2018

समिति ने मनाया 28वां रामजन्मोत्सव

जासं, नोएडा : सेक्टर 33 महाराजा अग्रसेन भवन में रविवार को रामनवमी के अवसर पर श्रीरामचरितमानस राष्ट्रीय समिति द्वारा 28वां रामजन्मोत्सव मनाया। पिछले 27 वर्षों से समिति रमाजन्मोत्सव पर नई पीढ़ी में संस्कारों से परिचित कराकर उनके आचरण में शिष्टाचार लाने की पहल की जा रही है। कार्यक्रम का शुरुआत गणेश पूजन, श्री हनुमान चालिसा पाठ व संकीर्तन कर की गई। इस मौके पर समिति की वार्षिक स्मारिका का विमोचन किया गया। इस दौरान चित्रकूट से आए मानस रत्न डॉ. पंडित राम गोपाल तिवारी ने रामकथामृत सुनाई।

सेक्टर 33 स्थित महाराजा अग्रसेन भवन में आयोजित रामजन्मोत्सव में रामकथामृत सुनती महिलाएं ● जागरण

कथा में उन्होंने बताया कि श्रीराम के इस धरती पर आकर उन्होंने अपने भक्तों को परमानंद दिया। धर्मनिष्ठ होकर अपने आदर्शों से ऐसे समाज का निर्माण किया जिसमें सभी सुखी थे। उन्होंने समाज की शक्तियों को संघठित कर अजेय रावण को पराजित किया। उन्होंने समाज को उदाहरण दिया कि धर्मनिष्ठ होकर असंभव को भी संभव किया।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में अग्रवाल मित्र मंडल का सहयोग रहा। इस मौके पर समिति के अध्यक्ष पंडित दिनेश चंद्र शर्मा, डॉ. भगवान दास पटैरया, देवेंद्र अवाना, वैद्य अच्युत कुमार त्रिपाठी, लीलू राम वर्मा, परमात्मा शरण बंसल, पूर्व आइएएस गणेश शंकर त्रिपाठी, पूर्व आइपीएस मुकेश बाबू शुक्ला, हरीश सचान आदि मौजूद रहे।

AVG LOGISTICS

A STEP AHEAD

AVG LOGISTICS LTD.

Rail & Road Service
Multi Axle Containers
Cool Chain-Reefer Container
Insulated Containers
Trailier/Flat
Open Body Truck
Rail VP Service-AC/Dry
Rake Clearance
Warehouse Management
Empty Container/Long Storage

Corp. Office : 102, Ist Floor, Jhilmil Metro Station Complex, Above State Bank of India, Delhi - 95
Tel : 011- 22124356, 8527906205
E mail : customersupport@avglogistics.com

Operations Office : 76F, Phase 4, Sector 56, Kundali Indutrial Area, Kundali, Sonepat   Mobile : 9810081839

FULL LOAD BOOKING ALL OVER INDIA

NAVI MUMBAI
Mallika Storage, Off. No. 206 Plot No. 14, Sec-19, Palm Beach Road, Vasi, Navi Mumbai-400705,
Cell : 9322630611, 9320070140
Email : mumbai@avglogistics.com

GUWAHATI
Kamrup Warehouse, Near Lal Godown
Opp. Central Jail, Lokhra, Guwahati-781034
Tel. : 0361-2738087, 08876053010, 8811092220
8619419996, 7670066610
Email :guwahati@avglogistics.com

HYDERABAD
Plot No2, Block No.4, Besides Namdhari Seeds,
Autonagar, Hyderabad- 500070
Ph : 08527000372
E mail : hyderabad@avglogistics.com

CHENNAI
No. 38, Suman Gali Nagar, Vadeperumpakkam,
Madhavaram, Chennai-600060
Mob. : 09840221313, chennai@avglogistics.com

KOLKATA
124, P.W.D. Road, (U.B.Colony)
Near Dunlop Bridge, 3bB Bus Stand
Kolkata - 700108
Cell : 9007898823

GOA
G-1 & G-3, Vinayaki Appt. Opp. Fire Station
Warkhandem, Ponda, Goa-403401
Tel. : 0832-2319039, 07798985095, 7798985091
Email : ponda@avglogistics.com

BANGALORE
No.11.2nd Floor. 3rd Cross, Behind VISL Building Sindhi Colony, J.C. Road,
Bangalore-560002
Phones : 7022009627, 7022009623
Email : sro.bangalore@avglogistics.com